सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 104

श्री साई शके : 29–30
मार्च–अप्रैल – 2011

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः ॥

॥ ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः ॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-World.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

ब्रह्माँण्ड शक्ति का कार्य नीचे दिए हुए चित्रों के अनुसार होता है

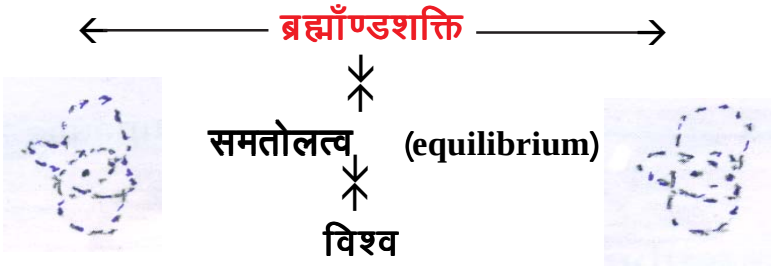

अगणित तारे और उनके चारों तरफ (Around) घुमने वाले असंख्य ग्रहों से ब्रह्माँण्ड या विश्व का निर्माण हुआ है। इस विश्व में समतोलत्व रखकर उसका संतुलन करने का काम ब्रह्माँण्ड शक्ति करती है और तारों और ग्रहों की गति से जो शक्ति उत्पन्न होती है वह ब्रह्माँण्ड शक्ति में जाकर विलीन हो जाती है। इस प्रकार नैसर्गिक रूप से समतोलत्व (equilibrium) होता है। लेकिन यह ब्रह्माँण्ड शक्ति निर्गुण निराकार है, जैसे बरसात में गिरने वाली बिजली, जिसका कोई विशिष्ट आकार नहीं होता है और इसी वजह से वह विश्व को नुकसान पहुँचा सकती है।

इस विश्व का सबसे सूक्ष्म रूप है अणु (Atom) विश्व की हर एक चिज असंख्य अणु–रेणू से बनी है। इस सबसे सूक्ष्म चीज की, मतलब अणु की रचना भी विश्व के सबसे भव्य चीज जैसे (सूर्यमाला) जैसी है। अणु में न्यूक्लिअर के चारों ओर (Around) इलेक्ट्रांस घूमते है। इस अणु की शक्ति (Atomic Energy & Nuclear Fusion/ Nuclear Fission) भी निराकार है। (Atomic Bomb)

अणु (चित्र) जीव ब्रह्माँण्ड–सूर्यमाना

मतलब जो सबसे सूक्ष्म अवस्था में है वही सबसे भव्य अवस्था में है, इसी का मतलब है पिंडी ते ब्रह्माँण्ड, ब्रह्माँण्ड ते पिंडी निर्गुण निराकार शक्ति है उसे आकार देकर विश्व में संतुलन रखने के उद्देश्य से जीव की निर्मिती हुई। इस अणु–रेणु से लेकर ब्रह्माँण्ड तक जो निर्गुण निराकार शक्ति है उसे आधार देकर विश्व में संतुलन रखने के उद्देश्य से जीव की निर्मिति हुई है। इस जीव की रचना भी अणु या सूर्यमाला जैसी है, जिसमें आत्मा और आत्मा के चारों ओर (Around) घुमने वाला कर्म होता है। आत्मा की निर्मिती तेज तत्व से होती है। जीव को ब्रह्माँण्ड की निर्गुण निराकार शक्ति को आकार देकर उससे विश्व का संतुलन करना/ विश्व के पंचमहाभूत तत्वों का संतुलन रख कर जगत में सुख–शांति–समाधान रखना यह काम/कर्त्तव्य करना होता है। इसलिए इस जीव को आत्मा और कर्म के अलावा उन्नीस माध्यमों की धारणा करनी आवश्यक होती है, जो विविध योनी में जन्म लेकर आत्मा धारण करता जाता है और अन्त में आवश्यक उन्नीस माध्यमों की धारणा करके यह मानव जन्म प्राप्त करता है। एक मानव को इन माध्यमों का विकास करके ब्रह्माँण्ड शक्ति को आकार देकर इस धरती पर लानी है और उससे जगत का/विश्व का संतुलन करना है। पुरातन काल में ऋषि मुनियों ने यही कार्य किया, उन्होंने पंचमहाभूत तत्वों की उपासना सिद्धी कर्त्तव्य रूप में किया। फिर उस शक्ति को देव–देवताओं का आकार दिया। लेकिन आज परिस्थिति बदल गई और मानव जो विश्व को कल्याण करने के लिए समर्थ था वह खुद का जीवन जीने के लिए भी असमर्थ हो गया है। इस आज के मनुष्य को मूलभूत मानव जन्म प्राप्त कर लेना, जिससे वह खुद का विकास करके ब्रह्माँण्ड का काम करे, इसी उद्देश्य से वं. दादा जी ने दिव्य पूज्य विभूतियों के मार्गदर्शन से इस कार्य की स्थापना की है। ब्रह्माँण्ड शक्ति पिंड पर/इस धरती पर पहले भी थी, लेकिन वं. दादाजी ने उसे सौम्य रूप देकर आह्वान किया और उसकी धारणा शक्ति पीठ में की गई और ऐसी सिद्धता की कि आसान और सौम्य तरीके से आज के मानव को सहज धारण हो, ऐसी उपासना करके, प्रापंचिक और पारमार्थिक दोनों जीवन का लाभ लेते हुए, उसका माध्यम ब्रह्माँण्ड शक्ति का माध्यम, पिंड बने।

आत्मा – कर्म – जीव – 19 माध्यम – देह धारण

कर्म एक शक्ति है जो जन्म लेकर उत्क्रांत अवस्था प्राप्त करने के लिए आवश्यक होती है। कर्म एक Energy Battery Charger जैसा है। जैसे कोई यंत्र को (Mobile) में चार्ज हुए बिना वो काम नहीं कर सकता वैसे ही आत्मा को जन्म प्राप्त करने के लिए जो चार्जर लगाना है वह है कर्म। जन्म लेकर आत्मा कर्म के अनुसार कर्त्तव्य करता है और कर्त्तव्य करते समय कर्म काया–वाचा–मन से कर्त्तव्य करके या पुण्याई से कमा कर इस जन्म से अच्छा कर्म तैयार करके खुद की उन्क्रांती करनी होती है।

कर्म : अनुकूल – कर्म प्रतिकूल

कुछ चीज हमारी जिंदगी में ठीक नहीं हुई तो हम कहते हैं कि हमारा कर्म बुरा है। वास्तविक कर्म बुरा होता तो हम जन्म को आते ही नहीं। अगर हमें अच्छा जन्म मिला है, अच्छा घर मिला, शिक्षा मिली तो हमारा कर्म अच्छा है। यह कर्म (Charger) धारण करने की क्षमता हमारे देह में होनी जरूरी है। जो कर्म आसानी से धारण हुआ वो अनुमूल कर्म है और जो कर्म धारण नहीं हो रहा है वह प्रतिकूल कर्म है। वह धारण नहीं हो रहा है इसीलिए आज जीवन में दुःख, अशांतता है; लेकिन वह धारण न होने के लिऐ कर्म जिम्मेदार नहीं है तो उसका कारण अपना देह अविकसित है। उपासना से देह विकसित हो गया तो कर्म की धारणा हुई और कठिनाई खत्म हुई तथा समाधान की प्राप्ती हुई। उदाहरण के तौर पर अगर हमें कलम उठाना है, तो वह हम आसानी से उठा सकेंगे तो वह अनुकूल कर्म हो गया लेकिन कोई टेबल उठाना तो वह मुश्किल है। उसके लिए या तो ताकत बढ़ानी चाहिए या किसी की मदद मांगनी है, वह मदद करने वाला ईश्वर है/ ब्रह्माँण्ड शक्ति है; उसकी सहायता मिली तो टेबल उठाया। टेबल उठाते समय पेन उठाने से ज्यादा शक्ति लगी, लेकिन काम हो गया। वैसे ही जब हम पहली मर्तबा कार्य केन्द्र पर आए तो परेशान थे, जीवन में काफी दुःख तथा अशांतता थी, जीवन के दोष निकालने के बाद, जो गुरूशक्ति का लाभ हुआ उससे देह का विकास होकर कर्म धारण होने लगा और अब समाधान मिलने लगा। लेकिन आने वाला कोई कर्म शायद इससे भी भारी हो तो उसके लिए देह का विकास अभी करना जरूरी है इसलिए नित्य ऊँकार साधना और कम से कम हफ्ते में एक बार कार्य केन्द्र पर आरती साधना और मुलाकात साधना के लिए उपस्थिति रहना जरूरी है क्योंकि हमारे माध्यम से गुरू को गुरूशक्ति प्रवाहित करके विश्व के अन्य लोगों को आत्मिक शक्ति का सहारा देना है जिससे उनके कर्म की धारणा होकर उन्हें भी सुख शांति समाधान मिले।

जब तेज तत्व से आत्मा की निर्मिती होती है, तब वह विश्व शक्ति का कार्य करने के लिए तैय्यार नहीं होता उसके लिए वह पृथ्वी पर, इहलोक में जन्म लेकर माध्यमों का विकास करते हुए निसर्ग के लिए परोपकार करके जीवन व्यतीत करता है जिससे कर्म की निर्मिती होती है। हर एक जन्म लेते समय 50 प्रतिशत कर्म खर्च होता है क्योंकि किस का कहाँ जन्म लेकर उन्नत्ती होगी यह तय (निश्चित) करने के बाद वहाँ जन्म लेने के लिए शक्ति खर्च होती है। इसके लिए जीव को विश्वशक्ति का सहाय्य होता है। मानव जन्म प्राप्त होने तक यह उन्क्रांती विश्व शक्ति या निसर्ग के हिसाब से होती है। मतलब कीड़े–कंकड़ों से प्राणी, पंछीयों तक सभी जन्में को आत्मा को जरूरी माध्यमों का लाभ करके देना होता है और इस प्रकार आत्मा उत्क्रांत होता जाता है।

उन्नीस माध्यम मतलब

5 पंच महाभूत तत्व, 5 पंच प्राणकोश, 5 पंच तन्मात्र, बुद्धि, मन, चित्त और अहंकार।

पंच महाभूत तत्व : जीवन को जिस धरती पर (पृथ्वी पर) आकर अपना कार्य करना है, उस पृथ्वी पर पाँच महाभूत तत्वों का कार्य चलता रहता है, वही तत्व, उसकी धारणा और संतुलन प्राप्त करने का तरीका जीव को करना होता है, वह पाँच तत्व मतलब :

1. ***पृथ्वी*** *(Earth/solid substance),*
2. ***आप (पानी) जो पृथ्वी से तीन गुना इस धरती पर है,***
3. ***तेज (चैतन्य/शक्ति) जो 'आप' से 11 गुना है,***
4. ***वायु (हवा) – जो तेज से 21 गुना है और***
5. ***आकाश तत्व : जो वायु तत्व से 108 गुना है।***

इन पंच महाभूत तत्वों की प्राप्ती करने के लिए जीवन जन्म को आता है; जैसे मछली के जन्म में आप तत्व की प्राप्ती हुई, किड़े–किटाणुओं के जन्म में पृथ्वी और वायु तत्व की प्राप्ती हुई, पंछियों के जन्म में आकाश तत्व मिला। ऐसे करते करते हर एक तत्व की जितनी जरूरत है उतनी उसकी धारणा करके जीव आगे बढ़ता है। यह उत्क्रांती निसर्गत होती है। हर एक जन्म के साथ कर्म भी बढ़ता जाता है।

निसर्ग में इन पाँच तत्वों का संतुलन होना जरूरी होता है । यदि यह संतुलन बिगड़ गया तो भूकम्प, भारी बरसात इत्यादि। जिससे वह तत्व अपने आपको संतुलित कर लेते हैं। मतलब अगर मानव या कोई भी प्राणी के कारण यह संतुलन असमान हुआ तो नैसर्गिक आपत्ति आती है, मगर किसी जीव को तकलीफ हो ऐसी ईश्वर की इच्छा नहीं होती, उसको तो अपने पंचमहाभूत तत्वों का संतुलन ठीक रखना है और मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य भी यही है। मानव के अपने देह में भी अगर यह संतुलन असमान हो गया तो तकलीफ, बीमारी इत्यादि आती है।

मानवी देह में पृथ्वी, आप और 50% , वायु से देहिक शक्ति बनती है और बाकी 50% वायु, तेज और आकाश तत्वों से आत्मिक शक्ति बनती है। अगर देहिक शक्ति और आत्मिक शक्ति मतलब इन पंचमहाभूत तत्वों का संतुलन बराबर है तो जीवन में सुख–शांति–समाधान का लाभ होता है।

पंच प्राण कोश

आत्मा विविध योनियों में जन्म लेते समय पंचमहाभूत तत्वों की धारणा एवं विकास कर लेता है इसलिए मानव जन्म प्राप्त होने तक उसे पंचमहाभूत तत्वों का लाभ पूरी तरह मिलता है और इसीलिए मानव के शरीर में जन्म लेते समय से ही इन तत्वों की प्राप्ती अपेक्षित संतुलन में होती है। हमारी आदतों से हम यह संतुलन बिगाड़ते हैं और खुद के लिए, बड़े होते समय से ही असमाधान का रास्ता बनाते है। इसीलिए संस्कार और योग्य आहार अति–आवश्यक है।

पंचप्राण कोश और इनके आगे के माध्यमों की प्राप्ती आत्मा को मानव के जन्म के पहले हो गई तो भी उनका विकास मानवी देह धारण के बाद ही मुमकिन होता है। यह विकास कर लेने के पश्चात ही वह जीव ब्रह्मॉण्ड शक्ति के काम में आ सकता है।

पंच प्राण कोशों का मानवी देह में महत्व

अन्नमय कोश : इस कोश की अवस्था है ग्रहण करना या धारण करना। जो खाते है, आँखों से देखते है, सूँघते है, त्वचा से महसूस करते है, इत्यादि, इत्यादि। स्थूल रूप में अन्न, वासना, आसपास के विषय ग्रहण करना और सूक्ष्म रूप में आत्मिक शक्ति/गुरू शक्ति या जिससे आत्मिक उन्नत्ति हो वह विचार, दृश्य इत्यादि।

प्राणमय कोश : इस कोश से प्राण या चैतन्य की पहचान होती है। स्थूल रूप में, जीवन जीना या फिर किसी भौतिक चीज की लालसा रखकर उस दिशा में जीवन व्यतीत करना। इस कोश से दृष्टिकोण, श्रद्धा, दिशा दृढ़ होती है। सूक्ष्म रूप में इसका कार्य यह है कि किसी भी व्यक्ति पर रोष (गुस्सा/कटुता) न रख कर, श्री गुरू के ऊपर श्रद्धा रखकर जीवन व्यतीत करना/जीवन की सार्थकता करना।

मनोमय कोश : मन की धारणा, विचारों की स्थिरता इस कोश के विकास से प्राप्त होती है। स्थूल अवस्था में दोलायमान अवस्था या अनिश्चित विचार और सूक्ष्म अवस्था में विचारों की स्थिरता और आत्मविश्वास।

विज्ञानमय कोश : इस कोश से ज्ञान की प्राप्ती होती है। स्थूल अवस्था में भौतिक ज्ञान और सूक्ष्म अवस्था में जीवन का ज्ञान। इसके स्थूल रूप से भौतिक जगत का आकर्षण बढ़ता है, प्रसिद्धी/नाम/लौकिक की लालसा होती है और सूक्ष्मरूप के विकास से हम अपने जीवन का सदुपयोग कैसे करें इसकी पहचान होती है।

आनन्दमय कोश : इस कोश से आनन्द या समाधान की प्राप्ती होती है। इस कोश का विकास नित्य उपासना से होता है और बाकी चारों कोशों के विकास में भी इस कोश का अनुभव आता है, मतलब समाधान या आंतरिक आनन्द इनकी प्राप्ती है।

पंच महाभूत तत्व	पंच प्राण कोश	पंच तन्मात्र	
आकाश	आनन्दमय	शब्द	बुद्धि
वायु	विज्ञानमय	स्पर्श	मन
तेज	मनोभय	रूप	चित्त
आप	प्राणमय	रस	
पृथ्वी	अन्नमय	गंध	अंहकार

पंच तन्मात्र : इनकी सूक्ष्म धारणा आत्मा मानव देह धारणा करने से पहले करता है और इसका विकास ईश्वर या गुरू शक्ति की सहायता से होता है। इन माध्यमों का विकास होना मतलब इनके द्वारा गुरूशक्ति प्रवाहित होना। उनका विकास शब्द तन्मात्र से शुरू होकर गंध तन्मात्र तक होता है। यह विकास होते समय हर एक तन्मात्र विकसित होकर शब्द तन्मात्र में समाता है। यह प्राप्ती होने के लिए इस समिति के कार्य में वं. दादा जी ने श्री पंत महाराज जी से सिद्ध शब्द ब्रह्म की प्राप्ती की।

शब्द : जो अपनी वाणी से प्रकट होता है। स्थूल रूप या नैसर्गिक रूप में सुबह के वक्त पंछीयों का चहचहाना जैसे मोहक लगता है और विश्व की गति से उत्पन्न हुआ जो अनाहुत नाद है – ऊँकार उसकी शक्ति का अंश जब हमारे शब्द में, पंछीयों के चहचहकने जैसे मोहकता (प्यार के साथ) के साथ, प्रकट होगा तब उससे करूणा, प्रेम और आत्मिक शक्ति की प्रचिती मिलेगी। इसका विकास आरती साधना, ऊँकार साधना से कर लेना है और जिसकी प्रचिती हमें मुलाकात साधना और कामकाज में मिलती है।

स्पर्श : हमारे शरीर में, बाहरी त्वचा में, पेशीयों की (receptors and transmitors cells) की तीव्रता सबसे ज्यादा हमारे हाथों में रहती है। उसके माध्यम से गुरू शक्ति प्रवाहित करने से स्पर्श तन्मात्र का विकास होता है। इसलिए आर्शीवाद या संवेदना हाथों से दी जाती है। अपने हाथों की पेशीयों का विकास करके शरीर

कर अन्य पेशीयों का विकास करने के लिए वं. दादा जी ने पाँच न्यासों का अंतर्भाव ऊँकार साधना में किया है। इस तन्मात्र का विकास होने पर हमारे माध्यम से गुरूशक्ति वातावरण में प्रवाहित होगी और वैसे ही वातावरण के आवश्यक विषयों की धारणा भी हमारी पेशीयों में होकर उसका ज्ञान हमें होगा।

रूप : इसका माध्यम है आँखे। जैसे अन्य प्राणियों की (जानवरों की) आँखों में करूणा और प्रेम दिखता है वही करूणा, प्रेम और गुरूशक्ति हमारी आँखों से प्रकट होना मतलब इस रूप तन्मात्र का विकास होना।

j l ¼ यह तन्मात्र विकसित होकर शब्द तन्मात्र में विलिन हुआ तो वाणी का स्थित्यंतर रसना में होता है। वैसे ही गुरू शक्ति अपने शरीर के रस के माध्यम से मतलब खून से शरीर की सभी पेशीयों का विकास करती है।

गंध : जब शरीर की सभी पेशीयाँ विकसित होकर गुरू शक्ति प्रवाहीत करती है तब अपने सहवास से अन्य लोगों को समाधान मिलेगा। तब गंध तन्मात्र विकसित हो गया। मतलब ईश्वर की सुगंध याने आत्मिक शक्ति हमारे माध्यम से प्रकट होती रहेगी और उस आत्मिक शक्ति का लाभ अन्य लोगों को हुआ तो उनको समाधान मिला।

पंच महाभूत तत्व, पंच प्राण कोश और पंच तन्मात्रों के बाद और चार माध्यमों से उन्नीस माध्यम पूरे होते है, वह है – बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार। बुद्धि स्थूल देह का माध्यम है, मन सूक्ष्म देह का और चित्त कारण देह का। अहंकार मतलब अहं–आकार, मतलब यहाँ तक सब माध्यम विकसित हुए तो मानव को ईश्वर का आकार प्राप्त होता है, वह अहं–आकार। अब उसे ईश्वर का कार्य करना है। उन्नीस माध्यमों का विकास मतलब जीवन का कारण या देह का पूर्णत्व और यह विकास साध्य करके ईश्वर का काम करना मतलब महाकारण अवस्था या जीवन का परीपूर्णत्व। यह परीपूर्णत्व प्राप्त करने के लिए आत्मा को देह की आवश्यकता होती है, ऐसी मानवी देह जिसमें उन्नीस माध्यम धारणा है। उस काया की प्राप्ती करते समय आत्मा को यह ज्ञान है कि उसका सूक्ष्म देह और मन की अवस्था ईश्वर शक्ति जैसी है और जीवन प्राप्त होकर उसका विकास करने के लिए ईश्वर की शक्ति की सहायता उसे मन की धारणा करने से ही प्राप्त होगी। मानवी काया प्राप्त होने के बाद, मनुष्य अपना जीवन काया के विकास में, मतलब सिर्फ काया के लिए न खर्च करके उससे मन की धारणा की प्राप्ती हो, इसीलिए ईश्वर ने हमें 'वाचा' यह माध्यम दिया है। तन–मन–धन में जीवन का धन 'वाचा' को कहा गया है क्योंकि इस वाचा का 'धन' जैसे उपयोग करके मन की धारणा करनी है। गुरू मार्ग में तो यह सबसे जरूरी है। इस मार्ग में आकर भी अगर हम काया की ओर जा रहे है, मतलब अगर हम यह दिखा रहे है कि हमें अन्य लोगों से अलग अनुभव आता है, ऐसा अनुभव जो काया से प्रगट करना, मतलब जोर से हिलना, जोर से ताली बजाना, बिना वजह अन्य गुरू बंधुओं को उपदेश करते रहना, इत्यादि। तो हम तन की धारणा से कोसों दूर चलें जायेंगे और जीवन का व्यर्थ नुकसान होगा। अगर हमारा विकास मन की तरफ है तो मन की धारणा और गुरूशक्ति का अनुभव हमारे शब्दों से, आँखों से प्रगट होगा। जितना मन का विकास होगा उतना काया का भी विकास होगा और फिर स्थूल देह, सूक्ष्म देह और कारण देह का कार्य शुरू होगा। स्थूल देह मतलब जो हमें नज़र आता है वह शरीर। सूक्ष्म देह, यह स्थूल देह के अंदर होती है और पंच प्राण कोशों से बनता है, इसका माध्यम है 'मन' और जितना इसका विकास होता है उतनी आत्मिक शक्ति की धारणा और समाधान प्राप्ती इस सूक्ष्म देह से होती है। तीसरा कारण देह, वह भी स्थूल और सूक्ष्म देह के अन्दर होकर उसमें आत्मा मतलब आत्मतत्व और जीवन का कारण होता है।

इन तीनों देहों का विकास, नित्य उपासना, आचरण और अवधान से नैसर्गिक रूप से होता है। नैसर्गिक रूप से कैसे, तो अगर एक आम के पेड़ को फल आया, जब तक वह कच्चा है मतलब कच्चा आम है तो काफी सख्त है। उसे अगर काटा जो 3 भाग दिखते हैं, ऊपरी छाल, जो की उसका **स्थूल देह** फिर अंदर का गूदा (खट्टा) वह **सूक्ष्म देह** और उसके भीतर बीज जो है, **कारण देह**। ऐसे ही हमारा आज का जीवन है। इस कच्चे आम में यह तीनों देह इतने संलग्न है कि उन्हें ठीक से अलग नहीं कर सकते। बाहर से सख्त, पत्थर जैसा है और अंदर से खट्टा और कड़वा। यही आम जब पक जाता है (विकास) तब उसके स्थूल देह में तेज आ गया और महक भी अच्छी है। लोगों को आम दिखने में कितना भी अच्छा लगे, लेकिन उसका आस्वाद तो, अंदर का मधुर रस है, जो है सूक्ष्म देह। सूक्ष्म देह के विकास से ही जीवन में मधुरता आती है जिससे हमें और लोगों को आनन्द आता है। अब उस आम का कारण मतलब (बीज) आसानी से अलग होकर बाहर आ गया। उस आम के जीवन के कारण से नया आम का पेड़ आएगा जो कि लोगों को हजारों आम का आस्वाद देगा। वैसे ही जब हमारा कारण देह उदित होगा तो वह ईश्वर का काम करेगा, विश्व शक्ति का संतुलन और जगत में सुख–शांति–समाधान का लाभ। इसकी प्राप्ती होने के लिए तो वं. दादा जी ने शक्तिपीठ की स्थापना करके उसकी प्रार्थना मतलब संकल्प दिया है जिससे *"मानवी जीवन का विकास होकर वह ईश्वरमय हो"* इसकी सिद्धता है।

ऐसा उन्नीस माध्यमों से सम्पूर्ण मानवी देह प्राप्त होना हमारा भाग्य है। सैकड़ों सालों के बाद आत्मा को देह प्राप्ती करके इस धरती पर आने का मौका मिलता है और कई जन्मों में अच्छा जीवन प्राप्त होकर इस गुरूमार्ग का जो लाभ हमें मिला है, इससे ज्यादा किसी का अच्छा भाग्य और क्या हो सकता है। अब यह जीवन सार्थक हो यही इच्छा करनी है।

ईश्वर ने हमें जो यह देह दी और श्री गुरू ने कृपावंत होकर जो हमें इस कार्य में शामिल कर लिया यह योगायोग (भेंट) नहीं है; तो यह एक योग (गाठभेट) है। यह हमेशा ध्यान में रखकर योग साधना (ऊँकार साधना, आचरण, अवधान) करके, जो देह आज प्राप्त हुआ है उसकी मदद से हमें अपना कारण देह उदित करना है। यही तो ईश्वर हमें हर रोज बताता है कि :

"सदा सर्वदा योग तुझा घडावा, तुझे कारणी देह माझा पडावा।" ईश्वर हमारे आत्मतत्व को कहता है कि जो देह मैने तुम्हें दिया है वह एक योग है, इसकी मदद से नित्य उपासना करके तुम्हारा कारण देह उदित करना है।

"उपेक्षू न को गुणवंता अनन्ता, रघुनाय का मागणे हेचि आता" हम हमेशा दूसरों की तरफ देख कर सोचते है कि हम कम नसीब के है क्योंकि किसी दूसरे के जैसा घर, नौकरी, गाड़ी हमारे पास नहीं है, इस सोच पर ईश्वर हमें कहता है कि तुम्हारे विकास के लिए सर्वगुणसम्पन्न, उन्नीस माध्यमों की धारणा करके यह देह तुम्हें दिया है, जगत में इतनी आत्माएँ हैं लेकिन आज तुम्हारा भाग्य है कि तुम्हें अनन्त गुणों वाला यह देह दिया है तो खुद की उपेक्षा मत करो, यही तुम्हें (हमारे आत्मतत्व को) इस शरीर के नायक से मुझे मांगना (कहना) है। *"उपासनेला दृढ़ चालवोव"* – उपासना पर दृढ़ता से चलना है। नित्य उपासना करनी है, नैमित्तिक नहीं। *"भूदेव संतासी सदा नमावे"* – भूदेव मतलब इस धरती पर जो देव के अंश है – मतलब अन्य मानव। और संत मतलब जिनका जन्मकारण उदित होकर वे ईश्वर की संतान बने है, इन सभी के सामने हमेशा नतमस्तक रहना है (नम्रता से/दूसरों को आदर देकर।) *"सत्कर्म योगे वय घालवावे"* – सत्कर्म करके ही यह उमर/जीवन बिताना है।

"सर्वा सुखी मंगल बोलवावे" – इसका मतलब यह नहीं है कि सभी लोगों के मुखों ने अपने बारे में मंगल बोला जाए; तो ईश्वर हमें कहता है कि जो देह तुम्हें दी है उस देह के सभी मुखों से मतलब मुंह, आँखें, चेहरा, हाथ, पाँव इत्यादि। जिन माध्यम से हम प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं वह सभी मुखों से अन्य लोगों के प्रति और विश्व के प्रति हमेशा मंगल बोला जाए।

जब ईश्वर हमें यह मार्गदर्शन करता है तो आखरी दो पंक्तियों में हमें उसको अभिवचन देना है कि, *"ज्या ज्या ठिकाणी मन जाय मासे, त्या त्या ठिकाणी निज रूप तुझे"* मतलब जहाँ जहाँ मेरा मन जाएगा वहाँ मुझे तुम्हारा ही रूप नज़र आएगा। *"मी ठेवितो मस्तक ज्या ठिकाणी ते ये तुझे सद्गुरू पाय दोन्ही"* – मतलब मेरा मस्तक मेरा अहं, मेरी बुद्धि, विचार तुम्हारे चरणों में हमेशा रहे। ऐसी सद्गुरू के चरणों कमलों में हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना है।

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम के सेवक

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com Dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible